मैं कब तक हँस सकूंगा....?

"रुको, वहाँ रुको.... अगर मैं पकड़ूँ तो तुझे पता है न कि मैं क्या करूंगी?" राहुल की काकी उसे चिल्ला रही है। राहुल तो इतना तेज़ दौड़ रहा है कि जैसे उसे कोई मारने आ रही है। राहुल तो क्या जो सब यह देखेगा वो सब यही सोचेंगे। पर कब तक मोटा राहुल अपने पतली काकी को हरा पायेगा? आखिर में राहुल उसकी काकी की हाथों में आ ही गया। काकी ने उसकी हाँथों से एक चॉकलेट का पॉकेट छीनकर ले लिया और फेंक दिया। राहुल की आँखों से आँसू के बड़े-बड़े बूँदों सिर का गिरना शुरु हो गया था। उसने "काकी, मुझे दे दो न। क्यूँ आप हमेशा ये करते हो। मुझे आप बिलकुल पसंद नहीं।" उसने वहाँ से भागा और

60th Kerala School Kalolsavam, Nov 28 - Dec 1, 2019 _ Kasaragod

Item Code: 642 Participant Code: 13

अपने रूम के कोने पर हर ~~समय~~ बार के तरह जाकर बैठ गया। ~~इस~~ रानी काकी ने कुछ न कहा ~~है~~ बस अपने कामों में लग गया।

फ्लॉट में अब ये सब में कोई नयापन नहीं था। ये सब तो हर दिन होता रहता है। अब ऐसा हो गया है कि ~~रह~~ ~~रमेश~~ मिस्टर रमेश, मि. सुशांत और लता जी को सुबह की ये शोर के बिना अपने दिन आरंभ करने में दिक्कत होती है।

ये सब देखके अगर कोई चौंका था तो वह सिर्फ एक व्यक्ति था। मिस्टर वरुण सिंह, फ्लाट में नया आया है। पर उन्हे शायद इन ~~सारी~~ सारे शोर की आदत नहीं हुई थी कि ये सब देखने के बाद उन्हें बहुत गुस्सा आ गया।

पर इनका गुस्सा तो वहाँ जायज़ ही था। कौन चाहेगा की अपनी ~~नय~~ नया फ्लॉट पर रखी पहली कदम में ही, एक बच्चों

के आँसू देखना ~~पड़ेगा~~ ?

इसी वजह से शायद अनकी नयी ऑफिस का पहला दिन भी खराब ही चला । इन सबका दोषी वो रोहन के काकी को ही समझ रही थी । क्योंकि अनके डाँटने के कारण ही उसने रोया था ।

~~अगले दिन भी~~ वरुण जी ने तो किसी तरह अपने गुस्से को काबू में ~~रख लिया था~~ पर ~~अगले~~ में लाया और एक अच्छी दिन की प्रार्थना करके सो गया । लेकिन अगले दिन भी यही सब दोहराया । उसके अगले दिन भी और उसके अगले दिन भी और हफ्ता एक गुज़र गया था । उसके साथ वरुण जी की सारे ~~छ~~ हफ्ते और सारे आशाये पानी में बह गयी थी ।

अंत में उसने अपने पड़ोसी नानी से पूछा, "नानी जी, ये हर दिन यहाँ ऐसा क्यों होता है ? इसी के कारण मेरा तो दिन ही खराब हो जाता है । उस बच्चे की

रोने की आवाज़ अब भी मेरे कानों में गूँज रही है। उसका कोई माँ-बाप नहीं है क्या जो उसकी काकी उससे ऐसे बरताव करती है?"
~~कितना~~ "पता नहीं बेटे, जबसे वो लोग यहाँ आया है तब से यहाँ हर दिन ऐसा ही है। सुना है उसका माँ बाप कोई ~~ऑक~~ ऑक्सिडंट मे मरा है।"
"उस बच्चों को रोते देख दिल ~~पिघल~~ पिघल जाता है।"
"हाँ पर हम क्याँ करे? अगर कोई पूछने जाये तो उसकी वह काकी सबको अच्छे से सुनाते हैं।"
"उस बच्चो को कितना मारती है वो! वह भी एक मिठाई खाने से। कैसे रहते है वह उस घर में?"
"हमारा तो इसमें एक ही फायदा है। अगर कोई बच्चा खाना न खाये तो हम कहते ही है कि हम रोहन की काकी को बुलायेगा तो सब खाना तो क्या उस

प्लेट को भी खा जाता है।" और वह नानी हँस पड़ी। पर इसी वक्त में वरुण के दीमाग में और कुछ चल रहा था। उसने कुछ तय किया था।

अगले दिन हो गयी। आज वरुण ऑफिस नही जाया है। उसने अपने ~~काक~~ रूम ~~घर~~ में रोहन की और ~~अपन~~ उसकी काकी के आने का इंतज़ार किया। पर कोई नही आयी। अगले दिन भी उसने यही किया लेकिन रोहन का और उसके काकी का कोई निशानी नही था। पर तीसरे दिन वे आयी। हर वक्त के तरह रोहन को काकी ने लाठी से मारा और उसने रोया। काकी ने जाया। इस समय वरुण चुप-चाप रोहन के पास जाया और उसे अपने साथ ~~रूम~~ ~~क~~ कमरे में ले गया। वो तो रोते ही जा रही थी। तब वरुण ने अपने जेब से एक चोकलेट निकाला। जल्द ही ~~उस~~ रोहन की नज़र उसपर पड़ी।

वरुण ने उस चोकलेट उस बच्चे के हाथों में दिया। तब उसने जल्द ही सिर ~~झुका~~ ऊपर करकर पूँछा, "अगर काकी जानगयी तो मेरा खैर नहीं।"

"नहीं, कोई नहीं जानेगी। मैं किसीको नहीं बताऊँगा।" उसने जल्दी से वो चोकलेट खतम करके वहाँ से भाग ली। यह हर दिन चल चलती रही। पहला चोकलेट था, फिर वह सान्विच बन गया। और ~~आखिर~~ ~~वह~~ फिर बहुत कछ। सब कुछ खाके जब उस गोल चेहरे में ~~एक~~ मुस्कुराहट आते थे वह देखकर वरुण को बहुत आनंद आता था। पाँच-छह दिन ऐसा चल्ही चलता रहा। रोहन तो काकी से कछ कहेगा नहीं और वरुण ने भी कुछ उनसे कहने को ज़रूरी न समझा। पर ये सारे चीज़े कब-तक ~~छुप~~ उस काकी से अनजान रख पाना? अंत में उसने ढूँढ ही लिया।

उसकी काकी ने बिना वक्त व्यर्थ किये वरुण की घर गया । और वह एकदम टूट पड़े ।

"आप ये सब क्या कर रही है? बच्चों को खाना खिलाता है, यहाँ हम है उसे सबकुछ देने केलिये । आप क्यू इतना मेहनत कर रही है?"

"क्यों कोई एक बच्चे से ऐसा व्यवहार करते है? क्या होगा अगर आप उसे ~~एक~~ उसके पसंत का कुछ करने देगा तो?"

"क्या मतलब है आपका? आप क्या जानते है उसके बारे में? आप क्या उसे मरते देखना चाहती है?"

अचानक वहाँ एक सन्नाटा छा गया था। वरुण के दिमाग में कुछ नहीं आ रहा था और राणी काकी तो रोते ही जा रहे थे। ऐसा पहली बार हो रहा था कि वह स्त्री किसी आदमी के सामने रोये।

थोडी देर के बाद वह कहने लगी,

~~एक साल हो गये~~", रोहन के माँ-बाप के गुज़रने के बाद आज ~~एक~~ दो साल हो गई है। फिर भी मैंने उसे अपनी बच्चे की तरह पाल पोसकर बडा किया है। लेकिन भगवान शायद हमारे खुशी नहीं चाहती। एक साल पहले हमें पता चला कि रोहन को ब्लड कान्सर है! उसी के लिये हम यहाँ इस ~~अनजान~~ शहर में आया हैं। पता है कि सब मुझे एक डायन की तरह देखती है जो हमेशा ~~बच्चा अपने~~ दूसरे को खाता है। लेकिन किसीने उसकी वजय समझना नहीं चाहा। "दीदी और जीजह जी हमेशा बाहर से खाना खाती थी। साथ उसे भी ले जाती थी। शायद इसी लिए उसे ये रोग आया"

"मुझे मॉफ कीजिये।" इस के अलावा वरुण और कुछ कह न पाया।

"~~वह~~ रोहन को ये सब ~~बहुत~~ जंक फूड बहुत पसंत है। वह कभी नहीं मानता जब मैं

उसे ये सब खाने से मना करती हूँ। मैं बाहर में राक्षसी का रूप पहनकर अंदर उसकी ~~सारे~~ ~~वह~~ लिये रोती हूँ। उसके हँसी मज़ाक में मैं भी अंदर ही अंदर हँसती हूँ। पता नहीं कब तक यह हँसी मज़ाक रहेगा और कब तक मैं हँस सकूँगा ?"

उस बेचारी काकी के ~~इस~~ ~~लंबे~~ इन कुछ शब्दों ने वरुण को हिला ही दिया था। वह अंदर जल रहे थे।

कुछ दिन रोहन और उसके काकी को कोई नहीं देखा। ~~सेह~~ वरुण जब ढूँढा तो जान पाया कि रोहन का तबियत खराब होने के कारण वे लोग वहाँ से ~~बहुत~~ दूर किसी और रहने लगा है।

उन लोगों के वहाँ से जाने के बाद फ्लॉट पर अचानक एक अंधेरा छा गया था। अब हमेशा वहाँ सन्नाटा ही रहता है। उस सन्नाटे में, अकेला वरुण भी आज

उन लोगों के वापस आने का प्रार्थना करते हैं। शायद उसे भी अनजाने में ~~उस~~ उन शोर, चिल्लाने और आँसुओं का आदत हो गया था। ~~जो ज़िंदगी भर वह याद रखेगा~~। जो उसके दिल में ज़िंदगी भर का घाव बनकर रहेगा।